जिंदगी में इतने व्यस्त हो जाओं कि उदास होने का भी समय न मिले।
– अज्ञात

हौसलों की उड़ान

इसलिए उम्मीद की जा सकती है कि सरकार की ओर से छूट मिलने के बावजूद ज्यादातर देशवासी न तो बेवजह घर से निकलेंगे, न अनावश्यक यात्रा करेंगे और न ही यात्रा के दौरान सुरक्षित दूरी बनाए रखने में कोई कसर छोड़ेंगे।

मनमोहन नेगी।

इस वीकेंड के उस तरफ खड़ा नया सप्ताह नए उत्साह से हमारा स्वागत करने वाला है। दो महीने से ज्यादा चले लॉकडाउन के बाद दुकान–दफ्तर धीरे–धीरे खुलने लगे हैं, पर इससे जनजीवन सामान्य होने का वैसा अहसास नहीं हो रहा, जिसका सभी इंतजार कर रहे हैं। अगला हफ्ता यही अहसास अपने साथ लेकर आ रहा है। सरकार ने घोषणा कर दी है कि घरेलू उड़ानों पर लगी रोक सोमवार से हटा ली जाएगी। इसके साथ ही रेलवे ने 1 जून से 200 ट्रेनें रोज चलाने का भी एलान किया है, जिसके लिए टिकटों की बुकिंग शुरू हो चुकी है। आईआरसीटीसी के जरिए ही नहीं, रेलवे स्टेशनों, पोस्ट ऑफिसों और यात्री सुविधा केंद्रों के बुकिंग काउंटरों पर भी बुकिंग की जा रही है। इससे पहले स्पेशल ट्रेनें जरूर चलाई गई थीं, लेकिन वह विशेष स्थितियों में विशेष जरूरतों के अनुरूप उठाया गया कदम था।

लॉकडाउन पीरियड शुरू होने के बाद से ऐसा पहली बार हो रहा है कि बिना कोई कारण बताए, सिर्फ अपनी मर्जी से भी हम कहीं का टिकट ले सकते हैं और मनचाही जगह पर जा सकते हैं। हालांकि यह हकीकत अपनी जगह कायम है कि कोरोना से संक्रमित होने वालों की संख्या विदेशों में ही नहीं, देश में भी लगातार बढ़ती जा रही है। लेकिन विशेषज्ञों के बीच अब इस बात पर लगभग सर्वसम्मति है कि लॉकडाउन को जारी रखना महामारी से भी ज्यादा खतरनाक नतीजे ला सकता है। इसीलिए अर्थव्यवस्था को खोलने, आर्थिक गतिविधियां शुरू करने, जनजीवन को सामान्य बनाने में अब और देर नहीं की जा सकती। सरकार एक तरफ जनजीवन को सामान्य बनाने वाले कदम उठा रही है, दूसरी तरफ सभी संबंधित पक्षों से पूरी सावधानी बरतने का आग्रह भी कर रही है। संभावना यही है कि दो महीने के अंतराल के बाद उड़ान सेवाएं बहाल होंगी तो यात्रियों की कुछ ज्यादा ही भीड़ उमड़ पड़ेगी। देखना जरूरी है कि निजी एयरलाइंस इस स्थिति का फायदा उठाते हुए किराये में बेतहाशा बढ़ोतरी न कर दें। साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होगा कि वायरस का प्रसार रोकने के लिए अब तक किए गए प्रयासों पर हमारी किसी गलती से पानी न फिर जाए।

सरकारी तंत्र सारे जरूरी एहतियात बरत रहा है, लेकिन ये दोनों काम एक साथ तभी हो पाएंगे जब आम नागरिक भी अपनी जिम्मेदारी का ध्यान रखें। लंबे लॉकडाउन ने आम देशवासियों को चाहे जितना परेशान किया हो, पर इसने उनमें सतर्कता की भावना भी विकसित की है। इसलिए उम्मीद की जा सकती है कि सरकार की ओर से छूट मिलने के बावजूद ज्यादातर देशवासी न तो बेवजह घर से निकलेंगे, न अनावश्यक यात्रा करेंगे और न ही यात्रा के दौरान सुरक्षित दूरी बनाए रखने में कोई कसर छोड़ेंगे। यही वह जज्बा है जिसे बनाए रखते हुए हम अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने और कोरोना को शिकस्त देने का दोहरा लक्ष्य साध सकते हैं।

आध्यात्मिक उन्नति

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

बहुत से लोगों को लगता है कि जीवन बहुत जल्दी–जल्दी बीतता जा रहा है, हम एक मौसम से दूसरे मौसम की ओर बढ़ते जा रहे हैं.... बस यही सोचते हुए कि समय कहां जाता जा रहा है। अधिकांशतः हम सभी बेहद व्यस्त रहते हैं, इतना व्यस्त की हमें अपने जीवन, अपने उद्देश्यों और प्राथमिकताओं के विषय में सोचने का भी समय नहीं मिलता। कुछ परिस्थितियां तो ऐसी होती हैं जब हमें यह लगने लगता है कि शायद यह जीवन हमारा है ही नहीं। हमारी दिनचर्या या तो हमारे परिवार द्वारा नियंत्रित की जाती है या फिर ऑफिस में हमारे बॉस द्वारा। ऐसा लगता है मानो हमारे जीवन में क्या चल रहा है, इस विषय में सोचने के लिए एक क्षण भी हमारे पास नहीं है। जीवन रूपी समुद्र में बिना उद्देश्य बहते जाने जैसी परिस्थिति को हम टाल सकते हैं, हम कुछ क्षण जीवन की धारा किस ओर बहनी चाहिए, इस विषय में सोचने के लिए भी व्यतीत कर सकते हैं।

संपादकीय

चीन का धोखा

सच्चाई तो यह है कि कोरोना से ज्यादा देश में अन्य कारणों से लोग मरे। देश में कई हादसे हुए। कई हृदयविदारक और मार्मिक कहानियां हम सबके सामने आईं। लेकिन, इस लंबे लॉकडाउन के बावजूद हमारे यहां संक्रमण नहीं रुक पाया। इसका कारण क्या है? क्या चीनी मॉडल के सामने हमारा मॉडल बेकार है? अगर हम एक्सपर्ट की मानें तो चीन के आंकड़े भरोसे के लायक नहीं हैं। चीन ने कहीं न कहीं दुनिया को धोखा दिया है। हमारी भी कमी है, हम उसके धोखे में आ गए। देश के जाने–माने हेल्थ इकनॉमिस्ट डॉक्टर अनूप कर्ण का कहना है कि जहां वायरस का जन्म हुआ है, वहां संक्रमण का रुकना पच नहीं रहा है। मौतें अगर कम होती हैं तो उसे स्वीकार किया जा सकता है, क्योंकि बेहतर स्वास्थ्य सुविधा की मदद से उन्हें कम किया जा सकता है, लेकिन संक्रमण रोकना संभव ही नहीं है। वह भी वहां जहां वायरस ने जन्म लिया है। कहीं न कहीं आंकड़ों के मामले में चीन झूठ बोल रहा है। कुछ ऐसी ही राय अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली के पूर्व चिकित्सक डॉक्टर प्रमोद कुमार सिंघल की भी है। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि हमने चीनी झांसे में आकर हमने अपनी इकॉनमी को तो बैठा ही दिया, बीमारी को भी नहीं रोक पाएं। भारत ने पूरे देश में लॉकडाउन की घोषणा कर दी। अब तक लॉकडाउन के चार चरण बीत चुके हैं। उसके गंभीर परिणाम आने भी शुरू हो गए हैं। बेरोजगारी अपने चरम पर है। कोरोड़ों लोगों की नौकरियां जा चुकी हैं। ऐसा लग रहा है कि कोरोड़ों की अभी और जाएंगी। प्रवासी मजदूरों का बुरा हाल है।

विकासशील और पिछड़े देशों के साथ–साथ विकसित देशों में भी बेरोजगारी बड़ी समस्या बनकर सामने आ रही है। दुनिया के ज्यादातर देशों की स्थिति इतनी बुरी क्यों हुई, इसके कई कारण हैं।

वायरस या 'चाइनीज वायरस'

शिवेंद्र कुमार।

आज पूरी दुनिया कोरोना वायरस से परेशान है। कुछ लोग इसे 'वूहान वायरस' या 'चाइनीज वायरस' भी कह रहे हैं। इसकी वजह से मानों दुनिया ठहर सी गई है। मौतें लगातार बढ़ रही हैं। इन्फेक्शन भी तेजी से बढ़ रहा है। दवाध वैक्सीन की उम्मीद सिर्फ उम्मीद ही है। कोरोना को मानव जाति से अलग–थलग करने की तमाम कोशिशें कमजोर पड़ती दिख रही हैं। ऐसा लग रहा है कि अब हमें कोरोना के साथ ही जीना होगा। अगर हमने (खासकर भारत ने) कोरोना के चक्कर में लॉकडाउन को और अधिक बढ़ाया तो कई समस्याएं पैदा हो सकती हैं। बेरोजगारी और भूखमरी विकराल रूप में सामने आ सकती है। इससे होने वाली मौतें कोरोना से कई गुना ज्यादा हो सकती हैं। कोरोना की वजह से दुनिया की ज्यादातर देशों की इकॉनमी बुरी स्थिति में है। विकासशील और पिछड़े देशों के साथ–साथ विकसित देशों में भी बेरोजगारी बड़ी समस्या बनकर सामने आ रही है। दुनिया के ज्यादातर देशों की स्थिति इतनी बुरी क्यों हुई, इसके कई कारण हैं। कुछ लोग, यहां तक कुछ देश भी कोरोना वायरस को प्राकृतिक न मानकर मानव निर्मित मान रहे हैं। चीन पर इसका सीधा आरोप भी लगाया जा रहा

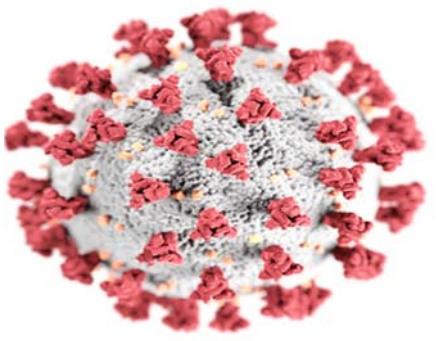

है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की भूमिका पर भी सवाल उठ रहे हैं। हालांकि, चीन और विश्व स्वास्थ्य संगठन समय–समय पर इन आरोपों को लगातार खारिज करते रहे हैं।

हम इन विवादों में नहीं पड़ते हैं कि यह वायरस मानव निर्मित है या फिर प्राकृतिक, लेकिन चीन के झूठे आंकड़ों के चक्कर में कई देशों की इकॉनमी लगभग बैठ गई है। यह सत्य है। भीषण आर्थिक संकट से दुनिया के कई देश गुजर रहे हैं। भारत सहित दुनिया के कई देशों में कोरोड़ों लोगों के सामने रोजी–रोटी का संकट खड़ा हो गया है। इन स्थितियों के लिए चीन कहीं न कहीं जिम्मेदार जरूर है। कैसे, आइए उसकी विवेचना करते हैं। इस वायरस का जन्म या कहें मानव में यह वायरस चीन के वूहान शहर से आया। वूहान न सिर्फ चीन बल्कि पूरी दुनिया का एक बड़ा बिजनस सेंटर है। वूहान चीन के हुबेई प्रांत की राजधानी है। वहां की आबादी लगभग 1 करोड़ 10 लाख की है। वहीं पूरे हुबेई प्रांत की आबादी करीब 6 करोड़ है।

मेडिकल जर्नल 'द लासेंट' की मानें तो कोरोना के पहले मरीज का पता 1 दिसंबर 2019 को चला। हालांकि, उस वक्त तक इस बीमारी के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। 26 दिसंबर को हुबेई प्रांत के एक बड़े अस्पताल में एक बुजुर्ग कपल में ऐसे कुछ लक्षण दिखे, जिसे पता चला कि यह वायरस अब तक दुनिया में पाए जाने वाले अन्य वायरसों से अलग है। इसके ठीक 3 दिन बाद 29 दिसंबर को हुबेई प्रांत के अधिकारियों ने जानकारी दी कि यह एक नया वायरस है। चीन की बात हम मान लें तो उसने 31 दिसंबर को इस वायरस की जानकारी विश्व स्वास्थ्य संगठन को दी। चीन का कहना है कि हमने समय पर पूरी दुनिया को इसके बारे में जानकारी दे दी।

चीन ने यह दावा करना शुरू कर दिया कि हमने लॉकडाउन से कोरोना पर काबू पा लिया है। चीन के इसी झांसे में भारत सहित दुनिया के कई देश आ गए। एक तरफ चीन में संक्रमण और मौतें काफी कम हो रही थीं, वहीं विकसित यूरोपीय देशों और अमेरिका में मौतें लगातार बढ़ रही थीं।

सूडोकु नवताल- 5364

सरल

		6	4		5	8		
9				1				7
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
3				8				9
		8	6		9	5		

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5363 का हल

2	4	5	6	9	8	1	7	3
1	7	6	4	3	5	8	2	9
3	8	9	1	2	7	6	5	4
9	1	7	3	6	2	4	8	5
5	6	3	8	7	4	9	1	2
4	2	8	5	1	9	3	6	7
7	3	1	9	5	6	2	4	8
8	9	2	7	4	1	5	3	6
6	5	4	2	8	3	7	9	1

अपना ब्लॉग

चीन के इस दावे पर सवाल

मोहन। चीन में कोरोना से पहली मौत 11 जनवरी को हुई। चीन का दावा है कि उसे 20 जनवरी को पता चला कि यह संक्रमण मानव से मानव में फैलता है। चीन का कहना है कि इसके पहले उसे इसके बारे में जानकारी नहीं थी। चीन के इस दावे पर कई लोग सवाल उठा रहे हैं। खैर छोड़िए, इसके ठीक 3 दिन वूहान के साथ–साथ हुबेई प्रांत के कई शहरों में चीन ने संपूर्ण लॉकडाउन की घोषणा की। इस बीच चीन वूहान सहित चीन के अन्य शहरों में कोरोना का संक्रमण कम होता गया। मौतें भी तुलनात्मक रूप से काफी कम हुईं। इस दौरान चीन ने कुछ अच्छे काम भी किए। कुछ दिनों में कोरोना के लिए एक बड़ा अस्पताल भी बना लिया। पूरी दुनिया में इसकी प्रशंसा भी हुई। भारत सहित दुनिया के कई देशों के एक खास विचारधारा के 'अजेंडाबाजों' ने चीन की राजनीतिक और आर्थिक ढांचे का ढोल पीटना शुरू कर दिया।